International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-02-2026, Accepted: 16-03-2026, Published: 31-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 280-282

एस. आर. हरनोट की आंचलिक कहानियों में स्त्री चेतना

अकबरअली शेख[1], डॉ. ब्रिजपाल सिंह गहलोत[2]
[1] शासकीय कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, खांडोळा–गोवा, शासकीय महाविद्यालय कला, विज्ञान, वाणिज्य, सांखळी क्लस्टर अनुसंधान केंद्र गोवा विश्वविद्यालय का शोधार्थी, भारत
[2] शासकीय कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय, केपें–गोवा, शासकीय महाविद्यालय कला, विज्ञान, वाणिज्य, सांखळी, क्लस्टर अनुसंधान केंद्र गोवा विश्वविद्यालय के शोध निदेशक, भारत

सारांश
अंचल, आंचलिक या आंचलिकता शब्द सुनते ही हमारा ध्यान 'मैला आँचल' उपन्यास, मेरीगंज गाँव तथा बिहार के ग्रामीण अंचलों की ओर जाता है। तब से लेकर अब तक आंचलिकता और मेरीगंज पर्याय बन गए हैं, जबकि आंचलिकता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और विस्तृत है। इसके पीछे प्रमुख कारण है— फणीश्वरनाथ रेणु। इनकी लेखनी ने पाठकों को इतनी गहराई से प्रभावित किया कि आंचलिकता का व्यापक धरातल धीरे–धीरे बिहार और उसके आस–पास के क्षेत्रों का ही पर्याय बनकर रह गया है। वास्तव में, आंचलिक रचना देश के किसी भी क्षेत्र को आधार बनाकर लिखी जा सकती है जो अपनी एक अलग पहचान रखता हो।
समकालीन दौर में एस. आर. हरनोट आंचलिक कथाकारों में अग्रणीय हैं। जिन्होंने हिमाचल प्रदेश के अंचलों को आधार बनाकर अंचलों में छिपी संस्कृति, भाषा एवं लोक जीवन का सजीव चित्रण किया है। इसी आंचलिक धरातल पर वे आंचलिक विसंगतियों एवं विडंबनाओं को उभारते हैं जो समय मानवता का प्रतीक बन जाता है। जातिगत भेदभाव, स्थानीय राजनीति, अंधविश्वास, अशिक्षा, पिछड़ापन तथा स्त्री समस्या जैसे प्रश्न इनके कथा साहित्य के केंद्र में हैं। इनमें हरनोट के कथा साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण आयाम स्त्री जीवन एवं उनका संघर्ष है। पारंपरिक स्त्री पात्रों के विपरीत, इनके नारी पात्र केवल करुणा या सहानुभूति तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए संघर्ष करने वाली सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरती हैं।

मूल शब्दः आंचलिकता, एस. आर. हरनोट, कहानियाँ, स्त्री शोषण, संघर्ष, चेतना।

समकालीन हिंदी कहानी के परिदृश्य में एस. आर. हरनोट एक ऐसे कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जो अपने भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिवेश के प्रति सजग रहते हुए यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति करते हैं। हिमाचल प्रदेश के चनावग गाँव में जन्मे हरनोट की कहानियाँ मूलतः उनके स्थानीय परिवेश की संवेदनात्मक और वैचारिक अभिव्यक्ति हैं। 'पीठ पर पहाड़', 'दारोश तथा अन्य कहानियां', 'जीनकाठी तथा अन्य कहानियां', 'मिट्टी के लोग', 'लिटन ब्लाक गिर रहा है', 'कीलें', 'भागा देवी का चायघर' आदि उनके चर्चित उल्लेखनीय कहानी संग्रह हैं। इनकी कहानियों के संदर्भ में प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह ने कहा है कि— "हरनोट हिमाचल के ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने वहां की प्रकृति और पर्यावरण के साथ–साथ जीवन और संस्कृति को भी अपनी कहानियों में जगह दी है। पहाड़ का जीवन जितना मनोहारी होता है, जीवन उतना ही कठिन। हरनोट की भाषा सहज है। अनुभव संसार एकदम नया और अनूठा है। ठेठ पर्वतीय, आंचलिकता और स्थानीय होते हुए भी सार्वभौमिक तत्त्व इन कहानियों की विशेषता है।"[1]
आंचलिकता केवल मैदानी ग्रामीण क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वनांचल, सागर एवं नदी अंचल, नागरी अंचल जैसे अनेक आयाम हैं, जिनमें पहाड़ी क्षेत्र भी एक महत्त्वपूर्ण आयाम के रूप में सामने आता है। एस. आर. हरनोट अपनी कहानियों में आंचलिकता के इसी पर्वतीय रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। सामान्यतः यह देखा जाता है कि पहाड़ी इलाकों में समय और आधुनिकता का प्रवेश अपेक्षाकृत देर से होता है। यहाँ का जीवन अपनी सहजता और सरलता के लिए जाना जाता है, किंतु निकट से देखने पर यह भी स्पष्ट होता है कि दूर–दराज और दुर्गम क्षेत्र होने के कारण शहरी आधुनिक सोच, वैज्ञानिकता, तर्कशीलता और प्रगतिशीलता के पहुँचने की गति भी धीमी रहती है। परिणामस्वरूप ये क्षेत्र केवल भौतिक सुविधाओं की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि जीवन के प्रगतिशील तत्त्वों की दृष्टि से भी अपेक्षाकृत पिछड़े रह जाते हैं। यही कारण है कि सामूहिकता और परंपरा के नाम पर रीति–रिवाज, कर्मकांड, धार्मिक अंधता, अशिक्षा और गरीबी जैसी स्थितियाँ यहाँ लंबे समय तक जड़ जमाए रहती हैं। इस संदर्भ में आलोचक रामदरश मिश्र का मत उल्लेखनीय है कि "आंचलिक साहित्य किसी क्षेत्र विशेष के केवल भौगोलिक स्वरूप का चित्रण नहीं करता, बल्कि वहाँ के जीवन–संघर्ष, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक यथार्थ को भी अभिव्यक्ति देता है।[2] ऐसे सामाजिक परिवेश में, जब समाज स्वयं पुरुषसत्तात्मक संरचना से संचालित हो, तब स्त्री का संघर्ष स्वाभाविक रूप से दोहरा हो जाता है।
हरनोट की कहानियों का एक महत्त्वपूर्ण आयाम स्त्री जीवन और उसका संघर्ष है। जिस देश में स्त्रियों को 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'[3] कहकर सम्मानित किया गया, वहीं कालांतर में उन्हें सामाजिक उपेक्षा और शोषण का सामना भी करना पड़ा। हिंदी साहित्य में समय–समय पर इस यथार्थ का चित्रण मिलता है। किंतु हरनोट की कहानियों में स्त्री केवल करुणा या सहानुभूति की पात्र नहीं रहती, बल्कि अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए संघर्ष करने वाली सशक्त व्यक्तित्व के रूप में उभरती है। इस संदर्भ में साहित्यकार एवं आलोचक स्मृति शुक्ल लिखती हैं— "ये स्त्रियाँ घोर संघर्ष और तमाम विपरीत परिस्थितियों में टूटती नहीं हैं बल्कि दृढ़ता से खड़ी रहती हैं। इन साहसी स्त्रियों में ये माद्दा है कि वे गलत को गलत कह सकती हैं, उसका प्रतिरोध कर सकती हैं और अन्यायियों को दंड भी दे सकती हैं।"[4] हरनोट की नारी पारंपरिक कहानियों में चित्रित स्त्री से भिन्न दिखाई देती है। पारंपरिक नारी पात्र जहाँ सामाजिक बंधनों, आर्थिक निर्भरता, अशिक्षा और पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण दबी–कुचली और असहाय प्रतीत होती है, वहीं हरनोट की कहानियों में स्त्री जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना साहस और आत्मविश्वास के साथ करती है। विशेषतः पहाड़ी जीवन की कठोर भौगोलिक और सामाजिक परिस्थितियों

में भी उनकी स्त्रियाँ श्रम, धैर्य और आत्मसम्मान के साथ अपने अस्तित्व को बनाए रखती हैं। 'भागादेवी का चायघर' की भागा, 'मुट्ठी में गाँव' की मंगली और 'कालिख' की शामा जैसे पात्र इसी सशक्त स्त्री चेतना के प्रतिनिधि हैं।

हरनोट का कहानी–संग्रह 'भागादेवी का चायघर' नौ कहानियों का संकलन है, जिसकी प्रतिनिधि कहानी भी इसी शीर्षक से संकलित है। यह कहानी पहाड़ी अंचल के कठोर जीवन संघर्ष के बीच स्त्री की जिजीविषा, श्रमशीलता और आत्मसम्मान को उभारती है। कहानी की नायिका भागा समुद्रतल से लगभग ग्यारह हजार पाँच सौ फुट की ऊँचाई पर चाय बेचकर जीवन निर्वाह करती है। दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियाँ, सामाजिक असुरक्षा और पुरुष प्रधान वातावरण उसके जीवन को निरंतर चुनौतीपूर्ण बनाते हैं। चायघर पर आने वाले कुछ पुरुषों की दृष्टि और व्यवहार से उत्पन्न मानसिक भय को कहानी में इस प्रकार व्यक्त किया गया है— "वे लोग चाय पीते हुए सहज नहीं दिखते। बैठने की मुद्राएं, शारीरिक भंगिमाएं, हावभाव और मनः स्थितियां वहां के अनुकूल नहीं हैं। उनकी आंखों से अजीब सी विकिरणें भीतर आ रही हैं। उन्हें केवल महसूस किया जा सकता है, देखा नहीं जा सकता। बहुत बार वे गुपचुप भीतर चाय बनाती भागा पर आक्रमण कर देती हैं। इस अप्रत्याशित हमले की कोई शक्ल नहीं है। आकार नहीं है। दृश्यरूप और आयतन नहीं है। उसकी आकुलता बढ़ने लगती है। धड़कने तेज होने लगती हैं। उसे लगने लगता है कि कोई हिम मानव हवा में समाहित होकर अपने खूंखार पंजे उसकी तरफ बढ़ा रहा है। वह सिहर उठती है।"[5] यह प्रसंग केवल भागा की व्यक्तिगत आशंका नहीं, बल्कि कार्यरत स्त्रियों की व्यापक सामाजिक असुरक्षा को भी उजागर करता है। फिर भी भागा परिस्थितियों से हार नहीं मानती और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस दिखाती है। पंचायत की प्रधान सुमिता के सहयोग से पहाड़ पर चल रहे अवैध धंधों पर प्रतिबंध लगवाना उसके इसी साहस और स्त्री चेतना का प्रमाण है।

इसी प्रकार 'मुट्ठी में गाँव' कहानी की नायिका मंगली ग्रामीण स्त्री के संघर्ष और प्रतिरोध की सशक्त अभिव्यक्ति है। प्रतिदिन के कठोर श्रम और बढ़ते कर्ज ने उसके जीवन को संघर्षपूर्ण बना दिया है, फिर भी वह परिस्थितियों के सामने झुकने के बजाय उनका प्रतिरोध करती है। कहानी में सरकार की सब्सिडी योजना के अंतर्गत मिली जर्सी गाय उसके परिवार के लिए आशा का प्रतीक बनती है, किंतु गाँव का प्रधान कर्ज का बहाना बनाकर उसे अपने घर ले जाता है। यह घटना ग्रामीण सत्ता संरचना में व्याप्त शोषण को उजागर करती है, जिसे मंगली तीखे शब्दों में व्यक्त करती है— "जानती हूँ पराधन ये कर्जा भी जानबूजकर कर तुमने थमाया है कि हम लोग बराबर तुम्हारे दरवाजे के फकीर बने रहें। मैं तो पहले से जानती हूँ रे पाजी तुजे, क्या चीज है। हमारा मांस खा–खाकर तेरा घर बार फल फूल रहा है। आज एक गाय पर हमारी उम्मीदें बंधी थी उसे भी लील गया।"[6] मंगली भाग्य को कोसकर चुप रहने वाली स्त्री नहीं है। वह अन्याय के विरुद्ध सक्रिय प्रतिरोध करती है, जिसका सशक्त दृश्य कहानी में इस प्रकार सामने आता है— "वह आगे बढ़ी और गाय को खूँटे से खोल दिया। पराधन की घरवाली बिदकी तो थी पर उल्टे हाथ का झटका न सह सकी और औंधे मुंह पराधन के पास जा गिरि। फिर उठ ही न पाई। पराधन के मुंह पर थूक के छींटें बिखर गए। पर वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाया।"[7] इस संदर्भ में आलोचक प्रभा खेतान का मत उल्लेखनीय है कि "भारतीय समाज में स्त्री का संघर्ष केवल निजी नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक और संरचनात्मक शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध का रूप भी ग्रहण कर लेता है।[8]

'कालिख' कहानी में शामा का चरित्र स्त्री संघर्ष के एक जटिल सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष को सामने लाता है। पति की मानसिक अस्थिरता, उसकी मृत्यु के बाद सामाजिक उपेक्षा तथा पारिवारिक प्रताड़नाओं के बीच शामा का जीवन निरंतर संघर्ष से भरा हुआ है। पति की मृत्यु के बाद जन्मे बच्चे को लेकर समाज उसके चरित्र का मूल्यांकन संदेह और नैतिकता के कठोर मानदंडों के आधार पर करता है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि शामा को केवल सामाजिक नैतिकता के दायरे में नहीं, बल्कि एक मानवीय अस्तित्व के रूप में देखा जाए। पति की मृत्यु के बाद भी उसकी शारीरिक और भावनात्मक आवश्यकताएँ समाप्त नहीं हो जातीं, किंतु पितृसत्तात्मक समाज इस स्वाभाविक मानवीय स्थिति को स्वीकार करने के बजाय स्त्री को ही दोषी ठहराता है। इस संदर्भ में लेखिका चित्रा मुद्गल का मत उल्लेखनीय हैं कि ''नारी चेतना की मुहिम स्वयं स्त्री के लिए अपने अस्तित्व को मानवीय रूप में अनुभव करने और करवाने का आन्दोलन है कि मैं भी मनुष्य हूँ और अन्य मनुष्यों की तरह समाज में सम्मानपूर्वक रहने की अधिकारी हूँ।''[9]

ऐसी परिस्थिति में शामा का प्रतिरोध स्त्री की स्वतंत्र पहचान के प्रश्न को सामने लाता है। पंचायत के समक्ष उसका डटकर खड़ा होना ग्रामीण समाज की विभिन्न सत्ता संरचनाओं को चुनौती देने जैसा है। अंततः विद्यालय के रजिस्टर में बच्चे के पिता के स्थान पर शामा का नाम दर्ज किया जाना स्त्री अस्तित्व की स्वायत्त पहचान का प्रतीक बन जाता है। कहानी में यह परिवर्तन अत्यंत प्रभावशाली दृश्य के माध्यम से व्यक्त किया गया है— "हेडमास्टर ने रजिस्टर खोला। पन्ने पलटे और होल्डर का निब जोर से दवात में डुबो दिया। स्याही झाड़ी और बच्चे के बाप का पहला नाम काट दिया नया नाम लिखा... मनु दत्त पुत्र श्रीमती शामा देवी।"[10] यह प्रसंग केवल एक प्रशासनिक निर्णय भर नहीं है, बल्कि स्त्री की स्वतंत्र पहचान की सामाजिक स्वीकृति का प्रतीक बनकर उभरता है। यहाँ लेखक ने पितृसत्तात्मक व्यवस्था की उस मानसिकता को चुनौती दी है जो स्त्री की पहचान को सदैव पुरुष से जोड़कर देखती रही है। विद्यालय के रजिस्टर में शामा का नाम दर्ज होना इस बात का संकेत है कि स्त्री अब केवल किसी पुरुष की आश्रित पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्वयं भी सामाजिक अस्तित्व और अधिकार की धारक है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि एस. आर. हरनोट की आंचलिक कहानियाँ केवल पहाड़ी जीवन के चित्रण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे वहाँ के सामाजिक यथार्थ और अंतर्विरोधों को भी गहराई से उद्घाटित करती हैं। भागा, मंगली और शामा जैसे पात्र यह सिद्ध करते हैं कि पहाड़ी समाज की स्त्री कठिन भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद साहस, श्रम और आत्मसम्मान के साथ जीवन का सामना करती है। इन पात्रों के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि स्त्री अब केवल पीड़ा सहने वाली सत्ता नहीं रही, बल्कि अन्याय और शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध की सशक्त आवाज बनकर उभर रही है।

संदर्भ सूची

1. नामवर सिंह, कहानीः नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, पृ. 145
2. रामदरश मिश्र, हिंदी कहानीः अंतरंग पहचान, वाणी प्रकाशन, पृ. 89
3. डॉ. अमृता, भारतीय संस्कृति में नारी एवं पुनरुत्थानः एक अध्ययन, हिंदुस्तानी जबान, जुलाई–सितंबर 2021, पृ. 30
4. एस. आर. हरनोट, 'भगदेवी का चायघर, समय साक्ष्य प्रकाशन, ब्लर्ब
5. एस. आर. हरनोट, 'भगदेवी का चायघर, समय साक्ष्य प्रकाशन, पृ.10

6. एस. आर. हरनोट, 'भगदेवी का चायघर, समय साक्ष्य प्रकाशन, पृ.153
7. एस. आर. हरनोट, 'भगदेवी का चायघर, समय साक्ष्य प्रकाशन, पृ.153
8. प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिंदी पॉकेट बूक, पृ. 97
9. डॉ. अर्चना मिश्रा, चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में चिंतन, पृ. 18
10. एस. आर. हरनोट, 'जिनकाठी तथा अन्य कहानियाँ', आधार प्रकाशन, पृ.111